असामान्य मनोविज्ञान का इतिहास

अतिप्राचीन काल में असामान्य व्यवहार का कोई लिखित साक्ष्य मनोवैज्ञानिकों के पास नहीं है। उस समय का अध्ययन अवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित था। उस समय से लेकर आज तक का असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास को 'किश्कर' (1985) ने तीन भागों में बाँटा है —

* पूर्ववैज्ञानिक काल: पुरातन समय से 1800 ई० तक
* असामान्य मनोविज्ञान का आधुनिक उद्भव: 1801 से 1950 तक
* आज का असामान्य मनोविज्ञान: 1951 से वर्तमान तक

पूर्ववैज्ञानिक काल
(पुरातन समय से 18वीं शताब्दी तक)

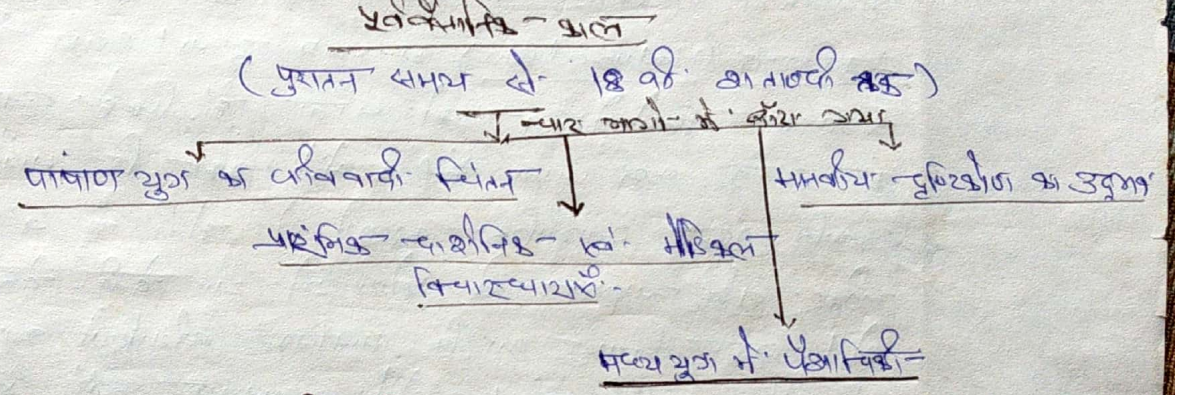

चार भागों में बाँटा गया —
- पाषाण युग का जीववादी चिंतन
- प्रारंभिक दार्शनिक एवं मेडिकल विचारधाराएँ
- मध्य युग में पैशाचिकी
- मानवीय दृष्टिकोण का उद्भव

पाषाण युग का जीववादी चिंतन —

असामान्य व्यवहार व उसके उपचार की ऐतिहासिक शुरुआत पाषाण युग के जीववादी चिंतन से माना जाता है। जीववाद विचारधारा के अनुसार संसार के प्रत्येक वस्तु जैसे- हवा, जल, पेड़-पौधे, पहाड़ आदि में एक अलौकिक जीव होता है। इसी कारण इन वस्तुओं में गति होती है। पेड़-पौधे बढ़ते हैं, नदी बहती है, पत्थर लुढ़कते हैं आदि। जीववादी विचारधारा के अनुसार व्यक्ति द्वारा असामान्य व्यवहार तभी किया जाता है, जब उसके शरीर में किसी बुरी आत्मा या भूत-प्रेत या पिशाच का प्रवेश हो जाता है और यदि अच्छी आत्मा का प्रवेश होता है तो व्यक्ति धार्मिक तथा आध्यात्मिक हो जाता है।

इस विचारधारा के साथ असामान्य व्यक्तियों के उपचार का ढंग में परिवर्तित हुआ। उस समय उपचार की दो विधियाँ लोकप्रिय थी — (i) अपदूत निस्सारण तथा
(ii) ट्रीफाईनेशन (Trephination)

अपदूत निस्सारण (Exorcism) की विधियों में प्रार्थना, जादू-टोना, शोर-गुल, झाड़-फूँक तथा अन्य शारीरिक कष्ट जैसे- कोड़े लगाना, भूखा रखना, भेड़ की लेंडी तथा शराब

सपना गुरुकुल

Scanned with CamScanner

मिलाकर तैयार औषधि पिलाना आदि सम्मिलित था। इसमें यह विश्वास था कि ऐसा करने से बुरी आत्मा व्यक्ति के शरीर से निकल जायेगी और व्यक्ति स्वस्थ्य हो जायेगा।

ट्रिफाइनेशन विधि में नुकीले पत्थरों से व्यक्ति की खोपड़ी में छेद कर दिया जाता था। यह मान्यता था कि इस छेद से बुरी आत्मा बाहर निकल जायेगी और व्यक्ति अच्छा हो जायेगा।

प्रारंभिक दार्शनिक एवं मेडिकल विचारधाराएँ—

आज से करीब 2500 वर्ष पहले मानसिक रोगों तथा असामान्य व्यवहार के संबंध में वैज्ञानिक विचारधारा प्रकृतिवाद (Naturalism) का जन्म हुआ। इसका श्रेय ग्रीक चिकित्सक हिपोक्रेट्स को जाता है, जिन्हें आधुनिक चिकित्साशास्त्र का जनक कहा जाता है। इन्होंने कहा कि मानसिक रोग की उत्पत्ति कुछ स्वाभाविक कारणों से होती है न कि शरीर के भीतर बुरी आत्मा के प्रवेश से या देवी-देवताओं के प्रकोप से। उनका विचार था कि मानसिक बीमारियों का मूल कारण मस्तिष्कीय विकृति है। इन्होंने वंशानुक्रम और पूर्ववृत्ति की महत्ता को बतलाते हुए स्पष्ट किया कि मस्तिष्क आघात होने से व्यक्ति में संवेदी तथा पेशीय कार्यों से संबंधित बीमारियाँ हो सकती हैं। उन्होंने मानसिक रोग हिस्टीरिया की व्याख्या करते हुए कहा कि यह सिर्फ औरतों में विशेषकर उनमें जिनमें बच्चा जन्म देने की लालसा अधिक होती है उत्पन्न होती है और विवाह इसका सर्वोत्तम इलाज है।

हिपोक्रेट्स के बाद ग्रीक एवं रोमन चिकित्सक भी इनका अनुसरण करते रहे। मिस्र में भी चिकित्साविज्ञान के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई और अनेक मंदिरों एवं गिरजाघरों को आरोग्यशाला में बदल दिया गया जहाँ सुखद, मनोरम एवं आनन्ददायक वातावरण में मानसिक रोगियों को रखने की व्यवस्था की गई। जब ग्रीक एवं रोमन सभ्यता का अंत होने लगा तो इन देशों के दार्शनिकों एवं चिकित्सकों के विचार एवं उपचार की विधियाँ भी प्रभावित होने लगी और वे फिर से मानसिक रोग का कारण दुष्ट आत्मा का प्रवेश तथा दैविक प्रकोप मानने लगे। इसे असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास का अन्धकार युग (200 A.D – 500 A.D) कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

मध्य युग में पैशाचिकी : (500 A.D. – 1500. A.D)

मध्य युग की शुरुआत रोमन सभ्यता के अंत तथा ईसाईमत के प्रारंभ से होती है। इस अवधि में एक बार फिर मानसिक रोग शैतानी शक्तियों एवं दैवीय प्रकोप का कारण समझा जाने लगा। मध्य युग के उत्तरार्द्ध में असामान्य व्यवहार में एक नयी प्रवृति देखी गयी और वह थी सामूहिक पागलपन की प्रवृति। इस महामारी में जैसे ही हिस्टीरिया का लक्षण किसी एक व्यक्ति में दिखता अन्य लोग भी इससे प्रभावित होने लगते और सभी अपने घरों से बाहर आकर असंयम व्यवहार जैसे उछलना-कूदना, रोना, एक-दूसरे का कपड़ा फाड़ देना आदि प्रारंभ कर देते थे।

15 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लोगों का यह ईश्वरपरक विश्वास और मजबूत हो गया। उनका मानना था कि व्यक्ति के अपने पापों के कारण ईश्वरीय अभिशाप के रूप में कोई दुष्ट आत्मा व्यक्ति को पकड़ लेता है और उससे मानसिक रोग उत्पन्न हो जाता है। या व्यक्ति अपनी इच्छानुसार दुष्ट आत्मा से दोस्ती करते हैं और असामान्य व्यवहार करने लगते हैं जिन्हें जादूगरनी या डाइन कहा जाने लगा। इनका उपचार कठोर शारीरिक दण्ड जैसे कोड़ा मारकर, उनके कुछ अंगों को जलाकर आदि ढंग से किया जाता था। इस तरह पूरा मध्य युग में एक तरह से अंधकार-ही-अंधकार रहा।

मानवीय दृष्टिकोण का उद्गम :

16 वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही मध्य युग के विचारों के विरुद्ध आवाज उठने लगीं। चिकित्साविज्ञान के लोग इस बात पर बल डाले कि मानसिक रोग एक बीमारी है और इसका उपचार मानवीय ढंग से होना चाहिए। इस काल के चिकित्सक पारासेलसस ने मानसिक बीमारियों के मनोवैज्ञानिक कारणों पर बल डाला तथा शारीरिक चुम्बकीय विधि द्वारा रोगियों का उपचार प्रारंभ किया। यह विधि बाद में सम्मोहन (Hypnosis) कहलाया।

रेजिनाल्ड स्कॉट उस समय के दूसरे प्रमुख चिकित्सक थे। इन्होंने पैशाचिकी तथा जादू-टोना की बुराइयों का पर्दाफाश किया। परिणामस्वरूप 16 वीं शताब्दी के मध्य में ही अनेक मठों एवं मंदिरों को मानसिक अस्पताल में परिणत किया जाने लगा परंतु इन आरोग्यशालाओं में भी मानसिक रोगि

Scanned with CamScanner

के साथ मानवीय व्यवहार न के बराबर किया जाता था।

मानसिक रोगियों के प्रति मानवता का दृष्टिकोण सही अर्थों में फ्रेंच चिकित्सक फिलिप पिनेल के प्रयासों से आरंभ हुआ। जिन्हें <u>आधुनिक मनोरोगविज्ञान का जनक</u> भी कहा जाता है। इन्होंने मानसिक रोगियों को मानवीय उपचार दिये जिससे उनमें शोरगुल तथा उत्तेजना में कमी आयी और वे उपचार में सहयोग करने लगे। इन प्रयासों के परिणाम उत्साहवर्धक आये। जिसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा और चिकित्सकों द्वारा मानवीय उपचार का स्वागत किया गया।